पद १४

(राग: परज - ताल: त्रिताल)

राखी लाज माझी श्रीमाणिका। तुजविण शरण मी जाऊं कवण आणिका।।ध्रु.।। दैवोज्झित मी बहु पापकर्मी। रतलों नाहीं मी निगमादि धर्मी।।१।। न कळे कांहीं निज वर्मक्रिया। योग न याग न साधन तें आर्या।।२।। ऐसियां तारक तूं एक जाणुनी। मनोहर भाकी वारंवार दीन वाणी।।३।।